लक्ष्य®

REET Mains 2023 सॉल्वड पेपर सहित

2400+ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों सहित

RBSE, NCERT की पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण फैक्ट्स के साथ नवीनतम संस्करण

मनु प्रकाशन प्रा. लि. जयपुर

कांति जैन
डॉ. महावीर जैन

REET MAINS

III ग्रेड अध्यापक

मुख्य भर्ती परीक्षा

लेवल-2 (कक्षा 6 से 8) हेतु

भाग-3

REET Mains हेतु यह भी पढ़ें

- भाग-1 : राजस्थान सामान्य ज्ञान, राजस्थानी भाषा एवं शैक्षिक परिदृश्य
- भाग-2 : राजस्थान सामयिक विषय, शैक्षणिक मनोविज्ञान व सूचना तकनीकी

(दोनों भाग लेवल-1 व 2 के लिए कॉमन)

सामाजिक अध्ययन

शैक्षणिक रीति विज्ञान सहित

इतिहास, भूगोल, संविधान व राजव्यवस्था,
अर्थव्यवस्था, मुद्रा, बैंकिंग व उपभोक्ता,
राजस्थान में कृषि एवं विपणन व शिक्षण विधियां

ज्ञान अनन्त
LAKSHYA

Bookbaazi.in

लक्ष्य®

REET MAINS भाग-3

III ग्रेड अध्यापक

लेवल 2 (कक्षा 6-8) भर्ती परीक्षा

सामाजिक अध्ययन

शैक्षणिक रीति विज्ञान सहित (शिक्षण विधियाँ)

इतिहास, भूगोल, संविधान व राजव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, मुद्रा, बैंकिंग व उपभोक्ता, राजस्थान में कृषि एवं विपणन व शिक्षण विधियाँ

लेखक

- डॉ. महावीर जैन
- कान्ति जैन
- अंशुल जैन
- डॉ. शिवानी जैन

विद्यार्थियों हेतु सूचना

- लक्ष्य की हमेशा से कोशिश रही है कि हम हर नई पुस्तक में लेटेस्ट पाठ्यसामग्री का समावेश करें। हमारा प्रयास रहता है कि पुस्तक का प्रेजेंटेशन इस तरह हो कि विद्यार्थियों को याद करने व रिवीजन करने में आसानी हो।
- इस संदर्भ में आपके सुझाव आमंत्रित हैं। कॉल करें 98299-27737 पर (सोम-शनि, 11-6 PM)

लक्ष्य®

मनु प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड, जयपुर

Bookbaazi.in

अनुक्रमणिका

- REET Mains Level-II सामाजिक विज्ञान भर्ती परीक्षा, 2022 (हल प्रश्न पत्र)।
  आयोजन: 26 फरवरी, 2023 (Shift-I) ..... i-iv

इतिहास

- सिन्धु घाटी सभ्यता 1
- वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति 18
- बौद्ध धर्म 30
- जैन धर्म 39
- महाजनपद काल 47
- मौर्य साम्राज्य (मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ। सम्राट अशोक का धम्म एवं अभिलेख) 53
- दिल्ली सल्तनत का विस्तार व प्रशासनिक व्यवस्थाएँ 76
- मुगल साम्राज्य (मुगल साम्राज्य एवं राजपूत राज्यों के साथ संबंध, मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्थाएँ) 105
- पृथ्वीराज चौहान 125
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन 130–150

भूगोल

- पृथ्वी की गतियाँ एवं उनके प्रभाव 151
- अक्षांश तथा देशांतर रेखाएँ 157
- वायुमंडल : संघटन एवं संरचना 164
- वायुमण्डलीय संचरण एवं पवनें 171
- महासागर : ज्वार-भाटा 182
- महासागरीय धाराएँ 187
- पृथ्वी पर जल एवं स्थल का वितरण 199
- विश्व की प्रमुख वनस्पति व वन्यजीव 210
- राजस्थान के कृषि आधारित उद्योग 216
- विश्व में कृषि के प्रकार 222
- विश्व के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश 226–234

राजनीति विज्ञान

- भारतीय संविधान: संविधान निर्माण की प्रक्रिया एवं विशेषताएँ 235
- उद्देशिका 247
- मौलिक अधिकार, मूल कर्तव्य एवं नीति निर्देशक तत्त्व 250
- सरकार का गठन व कार्य : व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका
  (संसद, राष्ट्रपति एवं उसकी संकटकालीन शक्तियाँ, मंत्रिपरिषद, प्रधानमंत्री एवं उनके कार्य) 262
- न्यायपालिका एवं सर्वोच्च न्यायालय 287
- स्थानीय स्वशासन : ग्रामीण एवं नगरीय, 73वाँ एवं 74वाँ संविधान संशोधन विधेयक 295
- भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं उसमें महिलाओं का प्रतिनिधित्व 309
- भारत की संघीय व्यवस्था एवं केन्द्र-राज्य संबंध 319–330

Bookbaazi.in

अर्थशास्त्र

- अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक 331
- औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था 336
- उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण 345
- विश्व व्यापार संगठन (WTO) 355
- निर्धनता 359
- खाद्य सुरक्षा 369
- मुद्रा के आधुनिक रूप 376
- साख की विभिन्न स्थितियाँ 382
- स्वयं सहायता समूह 388
- उपभोक्ता के अधिकार 391
- राष्ट्रीय विकास 403
- राष्ट्रीय आय 405
- मानव विकास 415
- कृषि उपज मण्डी 421
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली 427-432

शिक्षण विधियाँ

- सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ 433
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम 446
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में चुनौतियाँ 448
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अधिगम सहायक सामग्री एवं उपयोग 452
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ 460
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण 475-478

Bookbaazi.in

Syllabus

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड , जयपुर

राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक सीधी भर्ती प्रतियोगी परीक्षा का विस्तृत पाठ्यक्रम

परीक्षा की समयावधि एवं अंक-भार

क्र.सं.	संक्षिप्त विवरण
1.	परीक्षा 300 अंकों की होगी।
2.	परीक्षा के लिए एक प्रश्न-पत्र होगा।
3.	प्रश्न-पत्र की समयावधि 02 घण्टे 30 मिनट होगी।
4.	प्रश्न-पत्र में कुल 150 प्रश्न होंगे। समस्त प्रश्न बहुविकल्पी होंगे।
5.	उत्तरों के मूल्यांकन में नकारात्मक अंकन होगा। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए उस विशिष्ट प्रश्न के लिए विहित अंकों का एक तिहाई भाग काटा जाएगा। यहाँ गलत उत्तर से अभिप्राय अशुद्ध उत्तर अथवा एक से अधिक उत्तर होना है।

पाठ्यक्रम विवरण और विस्तार

परीक्षा के लिए प्रश्न-पत्र का पाठ्यक्रम विवरण और विस्तार ऐसा होगा जो प्राधिकृत अभिकरण द्वारा समय-समय पर विहित किया जाएगा और अभ्यर्थियों को समय के भीतर ऐसी रीति से, जो प्राधिकृत अभिकरण उचित समझे, सूचित किया जाएगा।

परीक्षा के लिए विषय एवं अंक-भार
अध्यापक, लेवल - द्वितीय (कक्षा 6 से 8 तक के लिए)

क्र.सं	विवरण	अंक-भार
1.	राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान, राजस्थानी भाषा	80 अंक

भूगोल

- राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप
- मानसून तंत्र एवं जलवायु
- अपवाह तंत्र- झीलें, नदियाँ, बाँध, एनीकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ
- राजस्थान की वन-संपदा
- वन्य जीव-जन्तु, वन्य जीव संरक्षण एवं अभयारण्य
- मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण
- राजस्थान की प्रमुख फसलें
- जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता और लिंगानुपात
- राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र
- धात्विक एवं अधात्विक खनिज
- राजस्थान के ऊर्जा संसाधन: परम्परागत एवं गैर-परम्परागत
- राजस्थान के पर्यटन स्थल
- राजस्थान में यातायात के साधन

इतिहास एवं संस्कृति

- राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ: कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और वैराठ इत्यादि।
- राजस्थान की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश, उनकी प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था इत्यादि।
- राजस्थान की स्थापत्य कला: किले, स्मारक, बावड़ी एवं हवेलियाँ इत्यादि।
- राजस्थान के मेले, त्योहार, लोक कला, लोक संगीत, लोक नाट्य एवं लोक नृत्य
- राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत
- राजस्थान के धार्मिक आंदोलन, प्रमुख संत एवं लोक देवता
- राजस्थान के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
- राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण
- राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प
- 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान, राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन
- प्रजामण्डल एवं राजस्थान का एकीकरण

राजस्थानी भाषा

- राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ
- प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ
- प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार
- राजस्थानी संत साहित्य एवं लोक साहित्य

2.	राजस्थान का सामान्य ज्ञान, शैक्षिक परिदृश्य, नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम और सामयिक विषय	50 अंक

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

- राजस्थान के प्रतीक चिह्न
- राजस्थान में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाएँ
- राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र
- राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल
- राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी
- राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल इत्यादि।
- राजस्थान के प्रमुख उद्योग।
- राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था
- राजस्थान में जन कल्याणकारी योजनाएँ।

शैक्षिक परिदृश्य

- शिक्षण अधिगम के नवाचार।
- राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार।
- विद्यालय प्रबंधन एवं संबंधित समितियाँ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में।

नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम

- नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009: प्रावधान एवं क्रियान्विति
- राजस्थान नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011
- राजस्थान के मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में नि:शुल्क प्रवेश।

Bookbaazi.in

सामयिक विषय

- राजस्थान की सम-सामयिक घटनाएँ।
- राज्य की अभिनव विकास योजनाएँ एवं क्रियान्विति
- अन्य सम-सामयिक विषय।

1. संबंधित विद्यालय विषय का ज्ञान **120 अंक**

सामाजिक अध्ययनः-

- प्राचीन भारत की सभ्यता एवं संस्कृतिः- सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक संस्कृति, बौद्ध एवं जैन धर्म एवं महाजनपद काल।
- मौर्य साम्राज्यः- मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ। सम्राट अशोक का धम्म एवं अभिलेख।
- दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्यः- दिल्ली सल्तनत का विस्तार, मुगल साम्राज्य एवं राजपूत राज्यों के साथ संबंध, सल्तनत एवं मुगल कालीन प्रशासनिक व्यवस्थाएँ, पृथ्वीराज चौहान।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन।
- पृथ्वीः- गतियाँ, अक्षांश एवं देशांतर।
- वायुमण्डलः- संघटन, संरचना, पवनें, वायुमण्डलीय संचरण।
- महासागरः- ज्वार-भाटा, धाराएँ, जल-थल वितरण।
- संसार की प्रमुख वनस्पति, वन्यजीव।
- राजस्थान के कृषि आधारित उद्योग।
- विश्वः- कृषि के प्रकार, प्रमुख औद्योगिक प्रदेश।
- भारतीय संविधानः- संविधान निर्माण की प्रक्रिया एवं विशेषताएँ, उद्देशिका, मूल अधिकार, नीति निर्देशक तत्त्व व मूल कर्तव्य।
- सरकार का गठन व कार्यः- विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका।
- स्थानीय शासनः- ग्रामीण एवं नगरीय, 73वाँ एवं 74वाँ संविधान संशोधन विधेयक।
- भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं उसमें महिला प्रतिनिधित्व।
- भारत की संघीय व्यवस्था, केन्द्र-राज्य संबंध।
- भारतीय अर्थव्यवस्थाः-
  - (i) अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक
  - (ii) औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था
  - (iii) उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण
  - (iv) विश्व व्यापार संगठन
  - (v) निर्धनता व खाद्य सुरक्षा
- मुद्रा एवं बैंकिंगः-
  - (i) मुद्रा के आधुनिक रूप
  - (ii) साख की विभिन्न स्थितियाँ
  - (iii) स्वयं सहायता समूह
- उपभोक्ता के अधिकारः- उपभोक्ता एवं उसके अधिकार
- भारतीय अर्थव्यवस्था का विकासः-
  - (i) राष्ट्रीय विकास
  - (ii) राष्ट्रीय आय
  - (iii) मानव विकास
- राजस्थान में कृषि एवं विपणनः -
  - (i) कृषि उपज मंडी
  - (ii) सार्वजनिक वितरण प्रणाली

2. शैक्षणिक रीति विज्ञानः- **20 अंक**

सामाजिक अध्ययनः-

- सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में चुनौतियाँ।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में अधिगम सहायक सामग्री एवं उपयोग
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

3. शैक्षणिक मनोविज्ञानः- **20 अंक**

- शैक्षिक मनोविज्ञानः अर्थ, क्षेत्र एवं कार्य
- बाल विकासः अर्थ, बाल विकास के सिद्धान्त एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- बाल विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव
- व्यक्तित्वः संकल्पना, प्रकार, व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक और व्यक्तित्व मापन
- बुद्धिः संकल्पना, विभिन्न बुद्धि सिद्धान्त एवं मापन
- अधिगम का अर्थ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- अधिगम के विभिन्न सिद्धान्त
- अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाएँ
- विविध अधिगमकर्ता के प्रकारः पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सृजनशील, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी इत्यादि।
- अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ
- अभिप्रेरणा एवं अधिगम में इसका प्रभाव
- समायोजन की संकल्पना, तरीके एवं समायोजन में अध्यापक की भूमिका

4. सूचना तकनीकीः- **10 अंक**

- सूचना प्रौद्योगिकी के आधार
- सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण (टूल्स)
- सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग
- सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव

Pookbaazi.in

REET Mains Level – II
सामाजिक विज्ञान [SST]
भर्ती परीक्षा, 2022 (हल प्रश्न पत्र)

आयोजन
26 फरवरी, 2023
Shift-I

1. अशोक की रानी का स्तम्भ लेख कौन से स्थान पर है?
(1) इलाहाबाद (2) दिल्ली
(3) मथुरा (4) बिहार (1)

2. निम्न में से कौन क्षेत्रीय परिषद् का सदस्य नहीं है ?
(1) क्षेत्र के समस्त केंद्रशासित प्रदेशों के प्रशासक
(2) केंद्रीय सरकार का गृहमंत्री
(3) प्रधानमंत्री
(4) क्षेत्र के समस्त राज्यों के मुख्यमंत्री (3)

3. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प धन विधेयक के संबंध में राष्ट्रपति के पास मौजूद नहीं है ?
I. अनुमति दे सकता है
II. अनुमति को रोक सकता है
III. पुनर्विचार के लिये वापस भेज सकता है
IV. संशोधन की सिफारिश कर सकता है
सही युग्म चुनिये-
(1) I और III (2) केवल III
(3) III और IV (4) केवल IV (3)

4. निम्नलिखित महाजनपद में से चम्पा किसकी राजधानी थी?
(1) मगध (2) अंग
(3) कोसल (4) काशी (2)

5. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए-
(a) ऋग्वेद (i) ऐतरेय
(b) सामवेद (ii) पंचविंश
(c) यजुर्वेद (iii) शतपथ
(d) अथर्ववेद (iv) गोपथ

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	iii	iv	ii	i
(2)	i	ii	iii	iv
(3)	iv	ii	iii	i
(4)	iv	iii	i	ii

(2)

6. निम्न में से कौन सा कथन असत्य है ?
(1) यदि पंचायत के विघटन के बाद शेष अवधि 6 माह से कम है तो चुनाव कराना आवश्यक नहीं है।
(2) पंचायत का कार्यकाल इसकी पहली बैठक से पाँच वर्ष है।
(3) पंचायत के विघटन के बाद 6 महीने की अवधि समाप्त होने से पूर्व चुनाव संपन्न कराने होंगे।
(4) शीघ्र विघटन के बाद नवगठित पंचायत पाँच वर्ष के कार्यकाल तक रहती है। (4)

7. किस लोकसभा में सबसे कम महिलायें निर्वाचित हुयीं ?
(1) छठी (2) पहली
(3) तीसरी (4) पाँचवीं (1)

8. ए.ओ. ह्यूम कौन थे ?
(1) भारत के गवर्नर जनरल (2) एक व्यापारी
(3) एक नेता (4) सेवानिवृत्त भारतीय सिविल सेवक (4)

9. नर्तकी की कांस्य-मूर्ति निम्नलिखित में से किस पुरातात्त्विक स्थल से प्राप्त हुई थी ?
(1) धौलावीरा (2) लोथल
(3) मोहनजोदड़ो (4) हड़प्पा (3)

10. निम्न में से कौन सा नीति निर्देशक तत्त्व मूल संविधान में नहीं था, वरन संवैधानिक संशोधन के द्वारा जोड़ा गया ?
(1) समस्त नागरिकों के लिये समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करना।
(2) पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्द्धन और वन तथा अन्य जीवों की रक्षा।
(3) कृषि और पशुपालन के आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों से संगठित करना।
(4) कलात्मक या ऐतिहासिक अभिरुचि वाले स्मारक या स्थान का संरक्षण करना। (2)

11. निम्न में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है ?

भारतीय संविधान के प्रावधान		स्रोत
(1) आपातकालीन प्रावधान	-	जर्मनी
(2) मौलिक अधिकार	-	यू एस ए
(3) विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया	-	जापान
(4) समवर्ती सूची	-	कनाडा

(4)

12. 1191 ई. में तराइन के युद्ध में किस शासक ने मुहम्मद गौरी के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी ?
(1) विजयचन्द (2) जयचन्द
(3) पृथ्वीराज चौहान (4) धर्मपाल (3)

13. 1876 ई. में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने किस संस्था की स्थापना की थी ?
(1) बम्बई एसोसिएशन
(2) दी इण्डियन एसोसिएशन
(3) ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन
(4) कलकत्ता नेटिव एसोसिएशन (2)

14. छावनी बोर्ड प्रशासित किया जाता है-
(1) सार्वजनिक उद्यम द्वारा
(2) राज्य सरकार द्वारा
(3) केंद्र सरकार द्वारा
(4) दोनों केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा (3)

Bookbaazi.in

15. भारत के प्रथम लोक सभा चुनाव में कितने राष्ट्रीय दलों ने भाग लिया?
(1) 14 (2) 11 (3) 12 (4) 13 (1)

16. महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति में कौन सा कारक उत्तरदायी नहीं है ?
(1) चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति
(2) पृथ्वी की परिभ्रमण गति
(3) महासागरीय लवणता में भिन्नता
(4) वाष्पीकरण व वर्षा (1)

17. गल्फ स्ट्रीम की तुलना अन्य किस महासागरीय धारा से की जा सकती है ?
(1) कैलिफोर्निया धारा (2) क्यूरोशिवो धारा
(3) आयोशिवो धारा (4) पेरु धारा (2)

18. अशोक का शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा से प्राप्त अभिलेख कौन सी लिपि में हैं?
(1) ब्राह्मी लिपि (2) खरोष्ठी लिपि
(3) अरेमाइक लिपि (4) यूनानी लिपि (2)

19. निम्न में से कौन संघीय कार्यपालिका का सदस्य नहीं है?
(1) प्रधानमंत्री एवं मंत्रिमंडल (2) राष्ट्रपति
(3) भारत के महान्यायवादी (4) नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक(4)

20. 1906 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी?
(1) बाल गंगाधर तिलक (2) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
(3) दादाभाई नौरोजी (4) लाला लाजपत राय (3)

21. भारत की पहली महिला केंद्रीय मंत्री थीं-
(1) अमृत कौर (2) विजय लक्ष्मी पंडित
(3) सरोजिनी नायडू (4) मीरा कुमार (1)

22. पंचायती राज संस्था में अनुसूचित जाति के लिये सीटों पर आरक्षण की व्यवस्था किस राज्य में नहीं है ?
(1) त्रिपुरा (2) मणिपुर
(3) असम (4) अरुणाचल प्रदेश (4)

23. 74वें संशोधन अधिनियम में प्रत्येक राज्य में किस प्रकार की नगरपालिकाओं के गठन का प्रावधान नहीं है ?
(1) नगर निगम (2) नगर पंचायत
(3) टाउन एरिया समिति (4) नगरपालिका परिषद् (3)
नोट: इस खण्ड के अधीन कोई नगरपालिका ऐसे नगरीय क्षेत्र में गठित नहीं की जाएगी जिसे राज्यपाल औद्योगिक नगरी के रूप में निर्दिष्ट करे।

24. "अढ़ाई दिन का झोंपड़ा" कहाँ स्थित है ?
(1) अजमेर (2) दिल्ली
(3) कन्नौज (4) बदायूँ (1)

25. निम्नलिखित को कालक्रमानुसार व्यवस्थित करें-
I. सरकारिया आयोग
II. प्रशासनिक सुधार आयोग
III. पुंछी आयोग
IV. राजमन्नार आयोग
V. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव
सही युग्म चुनिये-
(1) I, V, IV, III, II (2) II, IV, V, I, III
(3) I, III, V, IV, II (4) II, III, I, IV, V (2)

26. निम्न में से कौन सा मौलिक अधिकार भारतीय नागरिकों को प्राप्त है, विदेशियों को नहीं ?
(1) धार्मिक मामलों के प्रबंधन की स्वतंत्रता
(2) धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध
(3) कानून के समक्ष समानता
(4) प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार (2)

27. अकबर का जन्म किस स्थान पर हुआ था ?
(1) आगरा (2) अमरकोट
(3) काबुल (4) लाहौर (2)

28. किस वाद में उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि प्रस्तावना संविधान का भाग नहीं है ?
(1) एस.आर. बोम्मई मामला (2) बेरुबारी संघ मामला
(3) केशवानंद भारती मामला (4) मिनर्वा मिल्स मामला (2)

29. संविधान सभा ने बी.आर. अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति का गठन कब किया ?
(1) 29 अगस्त, 1947 (2) 26 नवंबर 1949
(3) 9 दिसंबर 1946 (4) 13 दिसंबर 1946 (1)

30. गिरि सुमेल का युद्ध कब लड़ा गया था ?
(1) जून, 1545 (2) जनवरी, 1543
(3) जनवरी, 1544 (4) जनवरी, 1545 (3)

31. 2022 में भारत में मानव विकास सूचकांक में प्रथम कोटि प्राप्त करने वाला राज्य था-
(1) केरल (2) सिक्किम
(3) पंजाब (4) गोआ (*)

32. निम्न में से राजस्थान के किस स्थान पर प्रथम मसाला पार्क की स्थापना की गई थी?
(1) बीकानेर में (2) जालौर में
(3) जोधपुर में (4) कोटा में (3)

33. समुद्र की सतह पर औसत वायुदाब कितना दर्ज किया जाता है?
(1) 1000 mb (2) 1013.25 mg
(3) 1000 mg (4) 1013.25 mb (4)

34. निम्न में से कौन सी झील शिकागो शहर से सम्बन्धित है ?
(1) विक्टोरिया झील (2) सुपीरियर झील
(3) मिशिगन झील (4) एरी झील (3)

35. उष्णकटिबंधीय बागानी कृषि के अन्तर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों तथा फसलों को सुमेलित करो-

फसल	क्षेत्र
(a) केला	(i) श्रीलंका
(b) गन्ना	(ii) क्यूबा
(c) चाय	(iii) मलेशिया
(d) रबड़	(iv) मध्य अमेरिका

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	iii	i	iv	ii
(2)	i	ii	iii	iv
(3)	ii	iv	i	iii
(4)	iv	ii	i	iii

(4)

Bookbaazi.in

36. निम्न में से किसे साख की शर्तों में शामिल नहीं किया जाता है ?
(1) उधार लेने वाले व्यक्ति की शिक्षा
(2) ब्याज दर
(3) संपार्श्विक व प्रलेखन
(4) पुनर्भुगतान का तरीका (1)

37. 'पॉवर्टी एण्ड अन-ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' पुस्तक के लेखक हैं-
(1) वी.वी. भट्ट (2) एस.सी. अरोरा व आयंगर
(3) दादाभाई नौरोजी (4) के. मुखर्जी (3)

38. निम्न में से कौन सा अनौपचारिक क्षेत्र-ऋण का स्रोत है?
(1) साहूकार व व्यापारी दोनों (2) साहूकार
(3) व्यापारी (4) सहकारी संस्थाएँ (1)

39. सही अभिव्यक्ति है-
(1) शुद्ध घरेलू उत्पाद ≡ सकल घरेलू उत्पाद + मूल्यह्रास
(2) शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ≡ सकल राष्ट्रीय उत्पाद - मूल्यह्रास
(3) साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ≡ राष्ट्रीय आय
(4) शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ≡ सकल राष्ट्रीय उत्पाद - मूल्यह्रास एवं साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ≡ राष्ट्रीय आय, दोनों (4)

40. भारत में 2020-21 में सकल जोड़े गये मूल्य (चालू कीमतों पर) में औद्योगिक क्षेत्र का अंश था-
(1) 26.8% (2) 25.3%
(3) 25.9% (4) 24.7% (3)

41. निम्नलिखित में से उष्णकटिबंधों की स्थाई पवन कौन सी है?
(1) चिनूक पवन (2) पछुआ पवन
(3) व्यापारिक पवन (4) ध्रुवीय पवन (3)

42. विश्व व्यापार संगठन की स्थापना का वर्ष है-
(1) 1996 (2) 1995
(3) 1994 (4) 1993 (2)

43. आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के अनुसार भारत में 2021-22 में सेवा क्षेत्र के सकल जोड़े गये मूल्य में वृद्धि का अनुमान है-
(1) 8.2% (2) 7.8%
(3) 8.8% (4) 8.5% (1)

44. व्यापारिक अन्न उत्पादक क्षेत्र निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है ?
(1) कम्पाज प्रदेश (2) प्रेयरी प्रदेश
(3) स्टेप्स प्रदेश (4) पम्पाज प्रदेश (1)

45. राजस्थान में मूँगफली की प्रमुख मंडी कहाँ स्थित है?
(1) अलवर (2) बीकानेर
(3) भीलवाड़ा (4) उदयपुर (2)

46. निम्न में से कौन सा कथन सही नहीं है ?
(1) राष्ट्रीय आयोग द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के 10 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के मामले देखे जाते हैं।
(2) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 में त्रि-स्तरीय प्रवर्तन तंत्र स्थापित करने की व्यवस्था है।
(3) राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग संक्षेप में राष्ट्रीय आयोग के नाम से जाना जाता है।
(4) जिला आयोग द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के एक करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के मामले देखे जाते हैं। (4)

47. निम्न में से कौन सा भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव नहीं है?
(1) नये कामों का सृजन
(2) निम्न जीवन-स्तर
(3) कई उत्पादों की नीची कीमतें
(4) कई उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार (2)

48. उत्पादों के माँग पक्ष के आधार पर सकल घरेलू उत्पाद की गणना करने का एक वैकल्पिक तरीका है-
(1) आय विधि (2) उत्पाद विधि
(3) जोड़े गये मूल्य की विधि (4) व्यय विधि (4)

49. सुमेलित करो-

कृषि प्रकार	नदी बेसिन
(a) गहन निर्वाहक कृषि	(i) मर्रे-डॉर्लिंग नदी बेसिन
(b) भूमध्यसागरीय कृषि	(ii) सान्ता-आना नदी बेसिन
(c) व्यापारिक अन्न उत्पादक कृषि	(iii) कांगो नदी बेसिन
(d) स्थानान्तरणशील कृषि	(iv) गंगा नदी बेसिन

	(a)	(b)	(c)	(d)	
(1)	i	ii	iv	iii	
(2)	iv	ii	i	iii	
(3)	ii	iv	iii	i	
(4)	iii	iv	ii	i	(2)

50. निम्न में से कौन सा राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड का कार्य नहीं है?
(1) कृषिगत उत्पादों की कीमत का निर्धारण करना
(2) मंडी-क्षेत्र में संरचनात्मक विकास करना
(3) किसानों को प्रशिक्षण देना
(4) विपणन प्रणाली में सुधार करना (*)

51. भूमध्यसागरीय प्रकार की कृषि निम्नलिखित जिस प्रदेश में की जाती है, वह है-
(1) राइन नदी की घाटी (2) कैलिफोर्निया
(3) नील नदी की घाटी (4) सीन नदी की घाटी (2)

52. न्यू इंग्लैण्ड औद्योगिक प्रदेश स्थित है-
(1) ऑस्ट्रेलिया में (2) यू.एस.ए. में
(3) इंग्लैण्ड में (4) न्यूजीलैण्ड में (2)

53. भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्राथमिक उद्देश्य था-
(1) भारतीय कृषि को नष्ट करना
(2) समुद्रपार व्यापार से लाभ कमाना
(3) यातायात प्रणाली को विकसित करना
(4) उद्योगों का विकास करना (2)

54. खमसिन पवन को 'डॉक्टर पवन' के नाम से किस क्षेत्र विशेष में जाना जाता है ?
(1) चिली तटीय क्षेत्र (2) पेरु तटीय क्षेत्र
(3) खम्भात की खाड़ी क्षेत्र (4) गिनी तटीय क्षेत्र (4)

55. भारत में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम किस वर्ष बनाया गया था ?
(1) 2011 (2) 2012
(3) 2013 (4) 2014 (3)

56. निम्न में से किसको उपभोक्ता अधिकारों में सम्मिलित नहीं किया जाता है?
(1) बोलने का अधिकार (2) सुरक्षा का अधिकार
(3) चयन का अधिकार (4) सूचित होने का अधिकार (1)

Bookbaazi.in

57. चन्द्रमा, पृथ्वी का एक चक्कर कितने दिन में पूरा करता है?
(1) 27.5 दिन (2) 29 दिन
(3) 27 दिन (4) 29.5 दिन (1)

58. दिसम्बर, 29,2022 को राजस्थान में स्वयं सहायता समूह की अधिकतम संख्या वाले जिले का नाम है-
(1) भरतपुर (2) अलवर
(3) करौली (4) चूरू (2)

59. 2020-21 (चालू कीमतों पर) में अधिकतम प्रति व्यक्ति विशुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद वाला भारत का राज्य था-
(1) गुजरात (2) तमिलनाडु
(3) महाराष्ट्र (4) गोआ (4)

60. सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों या रुकावटों को हटाना कहलाता है-
(1) वैश्वीकरण व निजीकरण दोनों
(2) उदारीकरण
(3) वैश्वीकरण
(4) निजीकरण (2)

61. इनमें से कौन सा परम्परागत उपागम है ?
(1) विषयी (2) अन्तर्विषयी
(3) बहुविषयी (4) विषयगत (1)

62. इनमें से कौन सा समस्या समाधान विधि में एक सोपान के रूप में पाया जाता है ?
(1) योजना का आयोजन करना
(2) परिचर्या का आयोजन करना
(3) परिकल्पनाओं का निर्माण करना
(4) अनुवर्ती कार्यक्रम (3)

63. शैक्षणिक कार्यों में एकरसता को कम करने के लिए ..... मूल्य अवसर प्रदान करते हैं।
(1) मनोरंजनात्मक (2) सौन्दर्यात्मक
(3) विषयी (4) व्यावसायिक (1)

64. इनमें से कौन सा पाठ्यवस्तु का तत्त्व क्रियात्मक पक्ष के विकास के अन्तर्गत आता है ?
(1) सृजनात्मकता (2) समस्या समाधान
(3) भाषा का शिक्षण (4) अभिरुचि (3)

65. राष्ट्रीय स्तर पर ....., दृष्टि बाधित बच्चों के लिए स्पर्श मानचित्र तैयार करने के लिए प्रयास कर रहा है।
(1) एन.सी.टी.ई. (2) एन.यू.ई.पी.ए.
(3) एन.सी.ई.आर.टी. (4) यू.जी.सी. (3)

66. मौरीसन द्वारा दिए गए बोध स्तर की शिक्षण व्यवस्था के पाँच सोपानों को सही क्रम में रखिए-
i. प्रस्तुतीकरण ii. वर्णन
iii. अन्वेषण iv. व्यवस्था
v. परिपाक
(1) iii, i, v, iv, ii (2) i, iii, v, iv, ii
(3) i, iii, iv, ii, v (4) iii, i, ii, iv, v (1)

67. शब्दावली खोज तालिका का मिलान कीजिए-

कॉलम A	कॉलम B
(a) राष्ट्रीय एकता	(i) नागरिक शास्त्र
(b) औद्योगिक क्रांति	(ii) भूगोल एवं अर्थशास्त्र
(c) औद्योगिक विकास	(iii) भूगोल, इतिहास एवं नागरिक शास्त्र
(d) संविधान	(iv) इतिहास

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	iii	iv	ii	i
(2)	iv	iii	ii	i
(3)	i	ii	iii	iv
(4)	iv	iii	i	ii

(2)

68. निम्नलिखित प्रयोजन विधि के चरणों को व्यवस्थित कीजिए-
(i) चयन एवं उद्देश्य निर्धारण
(ii) योजना बनाना
(iii) परिस्थिति उत्पन्न करना
(iv) योजना का क्रियान्वयन
(v) योजना का लेखा-जोखा
(vi) योजना का मूल्यांकन
(1) ii, iii, i, iv, vi, v (2) i, iii, ii, iv, v, vi
(3) iii, i, ii, iv, vi, v (4) ii, i, iii, iv, v, vi (3)

69. इनमें से कौन सामाजिक अध्ययन क्लब में आयोजित महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का अभिलेख रखता है?
(1) सचिव (2) प्रायोजक
(3) कोषाध्यक्ष (4) प्रचार अधिकारी (4)

70. हमारे देश में विद्यालयी स्तर पर, ज्यादातर धारणा इस पक्ष में है कि हमें सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए ..... उपागम को अपनाना चाहिए ..... उपागम के स्थान पर।
(1) एकीकृत, विषयी
(2) इकाई, एकीकृत
(3) एकीकृत, इकाई
(4) एकीकृत, सहसम्बन्धित (1)

शीन अनन्त ™

Bookbaazi.in

सिन्धु घाटी सभ्यता

◈ सिंधु सभ्यता की हमें सर्वप्रथम जानकारी 20वीं सदी के तीसरे दशक में हुई। सिंधु सभ्यता को **प्रागैतिहासिक युग** की सभ्यता माना जाता है।

◈ **सिंधु सभ्यता का नामकरण:**

♦ **हड़प्पा सभ्यता**- इस सभ्यता का सर्वप्रथम ज्ञात स्थल 'हड़प्पा' था। अत: इसे हड़प्पा सभ्यता कहा गया।

♦ **सिंधु घाटी सभ्यता (समर्थक- डॉ. व्हीलर आदि)**- बाद में सिंधु नदी घाटी में इस सभ्यता के अधिकांश स्थल उत्खनित होने के कारण इसे सिंधु घाटी सभ्यता कहा गया।

♦ **सिंधु सरस्वती सभ्यता**- वर्तमान में इस सभ्यता का महत्त्वपूर्ण विस्तार हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और गुजरात में लुप्त सरस्वती नदी घाटी क्षेत्र में मिला है अत: इसे **सिंधु-सरस्वती सभ्यता** नाम दिया गया है जो अधिक सार्थक लगता है।

♦ **हरियूपिया**- ऋग्वेद में हड़प्पा सभ्यता को '**हरियूपिया**' कहा गया है।

सिंधु सभ्यता के निर्माता एवं निवासी

मत	समर्थक
▪ मेसोपोटामिया संस्कृति की देन	गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर
▪ बलूची संस्कृति की देन	वॉल्टर फेयर सर्विस
▪ भारतीय संस्कृति (सोंथी) की देन	अमलानंद घोष
▪ आर्य संस्कृति की देन	लक्ष्मणस्वरूप पुसाल्कर एवं रामचन्द्रन
▪ द्रविड़ों की देन	सुनीति कुमार चटर्जी व राखलदास बनर्जी

हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति

♦ **ई.जे.एच. मैके**	: सुमेर से लोगों का पलायन।
♦ **मार्टिमर व्हीलर**	: पश्चिमी एशिया से 'सभ्यता के विचार' का प्रवसन
♦ **अमलानन्द घोष**	: हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व-हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता के परिणामस्वरूप हुआ।
♦ **एम. रफीक मुगल**	: हड़प्पा सभ्यता का विकास रावी नदी क्षेत्र में हुआ था

◈ सिंधु घाटी सभ्यता एक '**कांस्य युगीन सभ्यता**' है, जिसे सर्वप्रथम एक **अंग्रेज चार्ल्स मेसन** ने 1826 ई. में साहीवाल (पंजाब, पाकिस्तान) में हड़प्पा नामक स्थान पर एक पुरास्थल के रूप में पहचाना।

1853 में सर अलेक्जेण्डर कनिंघम हड़प्पा के टीले पर पहुँचे और कुछ मोहरों की प्राप्ति की। 1856 ई. में जेम्स बर्टन व विलियम बर्टन नामक दो भाइयों ने कराची से लाहौर तक रेल लाइन बिछाते समय हड़प्पा टीले से ईंटें निकालीं व उसमें काम में ली थीं।

◈ सिंधु घाटी सभ्यता की खोज का श्रेय **रायबहादुर दयाराम साहनी** को दिया जाता है, जिन्होंने पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक '**सर जॉन मार्शल**' के निर्देशन में **सन् 1921 में सर्वप्रथम इस स्थल की खोज की।** वर्ष 1923-24 में राखालदास बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो टीले की खोज की गई तथा 1925 में इसका उत्खनन किया गया। 1924 में लंदन से प्रकाशित एक साप्ताहिक पत्र में इस सभ्यता के बारे में भारतीय पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के निदेशक सर जॉन मॉर्शल ने सिंधु घाटी सभ्यता की नवीन खोज की घोषणा की व इसे '**हड़प्पा सभ्यता**' नाम दिया। **1946 में मॉर्टीमर व्हीलर ने भी हड़प्पा में उत्खनन कार्य किया।**

◈ भारत में इसे **प्रथम नगरीय क्रान्ति (नगरीय सभ्यता)** भी कहा जाता है, क्योंकि हमें इस सभ्यता के आठ शहर (1. हड़प्पा, 2. मोहनजोदड़ो, 3. चन्हुदड़ो, 4. कालीबंगा, 5. बनावली, 6. धौलावीरा, 7. सुरकोटड़ा, 8. लोथल) मिले हैं।

◈ **सभ्यता का विस्तार क्षेत्र:**

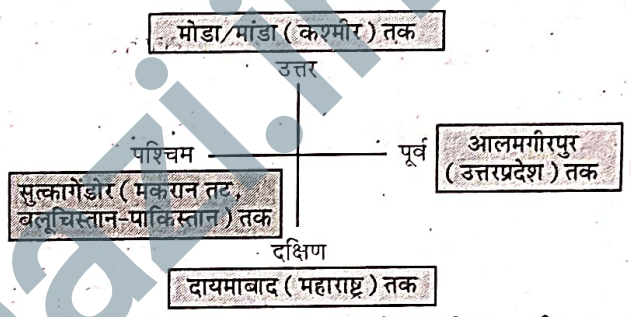

♦ बरेली के पास रामायण-महाभारत में विवेचित परिक्रमा नगरी कुछ समय पूर्व प्रकाश में आई है। यहाँ सैंधव सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। अत: इस सभ्यता का विस्तार पूर्व में बरेली तक रहा है।

◈ सिंधु सभ्यता का विस्तार 1299600 वर्ग किमी (लगभग 13 लाख वर्ग किमी) क्षेत्र में था। पश्चिम से पूर्व तक इसकी लम्बाई लगभग 1600 किमी तथा उत्तर से दक्षिण तक विस्तार लगभग 1400 किमी क्षेत्र में था। सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार **भारत, पाकिस्तान** एवं **अफगानिस्तान** में है।

अफगानिस्तान में इस सभ्यता के केवल 2 स्थल-शोर्तुगाई व मुंडीगाक हैं। इस सभ्यता के स्थल पाकिस्तान में सिन्ध, पंजाब एवं बलूचिस्तान में तथा भारत में जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र प्रांतों में मिले हैं।

◈ इस सभ्यता के सर्वाधिक स्थल **गुजरात** में हैं। **सिंधु सभ्यता का सम्पूर्ण क्षेत्र त्रिभुजाकार है।**

◈ इस सभ्यता के स्थलों का फैलाव **सिंधु नदी तंत्र, घग्घर-हाकड़ा (सरस्वती) नदी तंत्र** तथा **नर्मदा-ताप्ती नदी तंत्र** तक विस्तृत है। **सरस्वती नदी को नदीतमे, देवितमे और अम्बितमे भी कहा जाता है।**

◈ सिंधु नदी को 2500 वर्ष पहले ईरानी और ग्रीक लोग 'हिण्डोस' नाम से बुलाते थे और इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को उन्होंने इण्डिया कहा।

◈ **सिन्धु सभ्यता का कालक्रम या तिथिक्रम:**

♦ **जॉन मार्शल**- 3250 ई.पू. से 2700 ई.पू.।
♦ **मार्टीमर व्हीलर**- 2500 ई.पू. से 1500 ई.पू.।
♦ **सी.एल. फैब्री**- 2800 ई. पू. से 2500 ई. पू.।
♦ **अर्नेस्ट मैके**- 2800 ई.पू. से 2500 ई.पू.।
♦ **माधोस्वरूप वत्स**- 3500 ई.पू. से 2700 ई.पू.।
♦ **सी.जे. गैड**- 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू.।
♦ **व्हीलर व पिग्गट**- 2500 ई.पू. से 1500 ई.पू.।
♦ **वाल्टर फेयर सर्विस**- 2000 ई.पू. से 1500 ई.पू.।
♦ **फादर हेरास**- 5600 ई.पू. तक।
♦ **राजबली पाण्डेय**- 4000 ई.पू. से 3500 ई.पू.।

Bookbaaji.in

- डी.पी. अग्रवाल ने रेडियो कार्बन डेटिंग-14 तिथि निर्धारण के आधार पर सिंधु सभ्यता का **कालक्रम 2300 ई.पू. से 1750 ई. पूर्व** निर्धारित किया है। वर्तमान में डॉ. अग्रवाल द्वारा निर्दिष्ट तिथिक्रम को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है।
- गुजरात में स्थित सिंधु सभ्यता के एक प्रमुख नगर **रंगपुर में 800 ई.पू. तक** इस सभ्यता के साक्ष्य मिलते हैं।

- NCERT की कक्षा 12 की इतिहास की पुस्तक भाग-1 (संस्करण 2025-26) के अनुसार
  - सभ्यता का कुल समय-काल 6000 ई.पू. से 1300 ई.पू. तक है।
    1. प्रारंभिक हड़प्पा/प्रारंभिक चरण- 6000 ई.पू. से 1300 ई.पू. तक।
    2. परिपक्व हड़प्पा/शहरी चरण- 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक।
    3. उत्तर हड़प्पा काल- 1900 ई.पू. से 1300 ई.पू. तक।

सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

नगर विन्यास (Town Planning):

- हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय तथा व्यापार प्रधान सभ्यता थी। सुनियोजित व सर्वश्रेष्ठ नगर नियोजन इसकी प्रमुख विशेषता थी।
- हड़प्पा-सभ्यता के नगरों की संरचना और बनावट में असाधारण प्रकार की एकरूपता थी। प्रत्येक नगर सामान्यत: निम्न दो भागों में विभाजित था- (1) ऊपरी भाग (2) निचला भाग।

नगर के भाग

1. ऊपरी भाग
अन्य नाम- 'गढ़ी क्षेत्र' या 'नगर दुर्ग'
विशेष- • यह पश्चिमी भाग (पश्चिमी टीला) था जो अपेक्षाकृत छोटा तथा ऊँचा था
• यह दीवारों (चारदीवारी) से सुरक्षित किलेबंद-दुर्ग था।
• इसमें शासक, राजघराने और संभ्रांत व उच्च वर्ग के लोग निवास करते थे।

2. निचला भाग
अन्य नाम- 'नगर क्षेत्र' या 'निचला नगर'
विशेष- • यह पूर्वी भाग (पूर्वी टीला) था, जो अपेक्षाकृत बड़ा व नीचा था
• यहाँ रिहायशी बस्तियाँ थीं। इनमें सामान्य नागरिक रहते थे।
• नगर क्षेत्र में प्रवेश पूर्व दिशा से होता था।

लेकिन धौलावीरा में नगर तीन भागों में विभाजित था-
(1) नगर दुर्ग, (2) मध्य नगर, (3) निचला नगर।

अपवाद:
- हड़प्पा में निचला शहर दुर्ग या गढ़ी के दक्षिण-पूर्व में स्थित है।
- गुजरात के सुरकोटडा में ये दोनों भाग एक-दूसरे के साथ सटे हुए हैं।
- बनावली (हरियाणा) में ये दोनों अलग ना होकर एक ही साथ हैं।
- अपवादस्वरूप आमरी, कोटदीजी व चन्हूदड़ो ऐसे शहर थे, जहाँ हमें दुर्ग या गढ़ी क्षेत्र की प्राप्ति नहीं हुई।
- धौलावीरा और लोथल (गुजरात) जैसे स्थलों पर पूरी बस्ती किलेबंद थी तथा शहर के कई हिस्से भी दीवारों से घेर कर अलग किए गए थे। लोथल में दुर्ग दीवार से घिरा तो नहीं था पर कुछ ऊँचाई पर बनाया गया था।
- नगर क्षेत्र की सुरक्षा दीवार नहीं होती थी, लेकिन सुरकोटड़ा, लोथल व कालीबंगा से नगर क्षेत्र की भी सुरक्षा दीवार प्राप्त हुई है।

- **बुर्ज:** दीवार पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बने बुर्ज सामान्यत: रक्षा दीवार से ऊँचे होते थे। **अपवादस्वरूप लोथल में बुर्ज नहीं पाया गया।** सामान्यत: रक्षा दीवार और बुर्ज मिट्टी के बने होते थे। **हमें सुरकोटड़ा से पत्थर की सुरक्षा दीवार व मोहनजोदड़ो से पक्की ईंटों के बुर्ज की प्राप्ति हुई है।**

सड़कें व गलियाँ:
- **ग्रिड शैली में नगर की बसावट:** इसमें सड़कें सीधी थीं एवं एक-दूसरे को समकोण में काटती थीं। ये पक्की ईंटों से निर्मित थीं। **परन्तु कालीबंगा से हमें कच्ची ईंटों से निर्मित सड़कें प्राप्त हुई हैं।**
- सामान्यत: नगरों में प्रवेश पूर्वी सड़क से होता था और जहाँ यह प्रथम सड़क से मिलती थी, उसे **ऑक्सफोर्ड** कहा जाता था। नगर की प्रमुख सड़क को **प्रथम सड़क** कहा जाता था।
- मोहनजोदड़ो में सबसे चौड़ी गली (मार्ग) 11 मीटर थी। यह संभवत: प्रमुख मार्ग रहा होगा।
- कालीबंगा में प्रमुख मार्ग 7.20 मीटर चौड़ा था।
- यहाँ गलियों का माप हड़प्पा सभ्यता के प्रसिद्ध अनुपात 4:2:1 पर आधारित था।

सफाई व्यवस्था: कूड़ा-करकट फेंकने के लिए सड़कों के किनारे या तो गड्ढे होते थे अथवा कूड़ेदान रखे जाते थे। शौचालयों के लिए **सोख्ता गड्ढों** का इस्तेमाल होता था।

जल निकासी व्यवस्था (Drainage System): यह पहली प्राचीन भारतीय सभ्यता थी जिसमें व्यवस्थित नगर नियोजन और भूमिगत जल निकास प्रणाली थी। **प्रत्येक सड़क और गलियों के दोनों ओर पक्की व ढकी हुई नालियाँ थीं।** प्रत्येक घर का पानी इन्हीं नालियों द्वारा बाहर जाता था। मुख्य सड़कों और गलियों के नीचे 23 सेमी चौड़ी और 50 सेमी तक गहरी पक्की ईंटों से निर्मित नालियाँ थीं जो बड़े-बड़े पत्थरों से ढकी होती थीं। मुख्य नालियों में अवरोध लगाकर कचरा रोकने की व्यवस्था की गई थी। **नालों के ढके होने के कारण इनमें जगह-जगह पर मेनहोल (शोषक कूप) बनाए गए थे,** जिनके जरिए इनकी देखभाल और सफाई की जाती थी।

भवन-निर्माण: हड़प्पा सभ्यता के नगरों में उत्खनन के दौरान दो प्रकार के भवनावशेष प्राप्त हुए हैं- (1) आवासीय भवन (2) सामुदायिक या सार्वजनिक भवन
सामुदायिक भवन दुर्ग या गढ़ी में थे और आवासीय भवन निचले नगर में थे।

- **सामान्य आवासीय भवन:**
  - मकान प्राय: दो या तीन मंजिले होते थे। प्रत्येक आवासीय भवन के बीच में एक आँगन होता था, जिसके चारों ओर चार-पाँच कमरे, एक रसोईघर और एक स्नानागार बना होता था। अधिकांश घरों में एक कुआँ भी होता था, जिसकी चिनाई मजबूत ईंटों से की जाती थी। सम्पन्न लोगों के घरों में शौचालय भी होते थे। बड़े आकार के भवनों में तीस कमरे तक होते थे। खुदाई में 27 मीटर चौड़े और 21 मीटर लम्बे मकानों के प्रमाण मिले हैं जिनमें 10 मीटर का आँगन होता था।
  - दीवारों पर मिट्टी का प्लास्टर होता था।
  - छतें पीटी हुई मिट्टी तथा कच्ची और पक्की ईंटों की बनती थीं। छतों पर कड़ियाँ लगाने का भी रिवाज था।
  - मकानों के नीचे तहखाने रखने की प्रथा थी।
  - घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग में न खुलकर पिछवाड़े की ओर गली में खुलते थे। सड़क की तरफ खिड़की और रोशनदान भी नहीं बने होते थे। **लोथल इसका अपवाद है।** वहाँ मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलने के अवशेष मिले हैं। मकान एक-सीध में बने होते थे।
  - भवनों के फर्श पक्की ईंटें बिछाकर बनाए जाते थे।
  - भवन निर्माण में मानकीकृत- 7.5×15×30 सेमी या 10×20×40 सेमी आकार की पक्की ईंटों (कालीबंगा, लोथल व रंगपुर में कच्ची ईंटों का) का प्रयोग होता था। पत्थर के भवनों का अभाव।

Bookbaazi.in

- **सार्वजनिक भवन:** मुख्य नगर के गढ़ी वाले क्षेत्र में सार्वजनिक भवन निर्मित थे। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से ऐसे अनेक विशाल भवन मिले हैं। यहाँ 20 स्तम्भों पर निर्मित लगभग 71 मीटर लम्बा और इतना ही चौड़ा एक विशाल भवन मिला है जो शायद सार्वजनिक सभा भवन व नगर संघ कार्यालय दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता था। **मैके** उसे 'व्यापारिक मण्डी' और **जॉन मार्शल** 'धार्मिक स्थल' मानते हैं।
- हड़प्पा में पश्चिमी टीले पर एक समानान्तर चतुर्भुजाकार दुर्ग था।
- **विशाल अन्नागार:** ये सिन्धु घाटी सभ्यता में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की उपस्थिति को दर्शाते हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से विशाल अन्नागारों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। मोहनजोदड़ो में प्राप्त विशाल अन्नागार का आकार 150×50 फीट (45.71 मीटर लम्बा व 15.23 मीटर चौड़ा) है। इसकी उपस्थिति से वहाँ एक केन्द्रीय कर वसूलने वाली सत्ता की उपस्थिति का पता चलता है। हड़प्पा में अन्नागार दुर्ग के बाहर अवस्थित था। यहाँ अन्नागार दोनों ओर 6-6 की कतार में हैं।
- **सार्वजनिक स्नानागार:** यह विशाल स्नानागार '**मोहनजोदड़ो**' में मिला है। इसकी आकृति आयताकार है। यह 54 मीटर लम्बा एवं 33 मीटर चौड़ा है, जिसमें 11.89×7×2.43 मीटर (39×23×8 फीट) का कुण्ड बना हुआ है। **सर जॉन मार्शल** ने इसे **विश्व का एक अद्भुत निर्माण** कहा है। स्नानागार का फर्श और दीवारें पक्की ईंटों की बनी हैं। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर से लेपित कर उसके ऊपर चारकोल **(डामर या बिटुमिन या प्राकृतिक राल)** की परत चढ़ाई गई थी। स्नानागार के पूर्व की ओर इसे भरने के लिए कुआँ था। स्नानागार के दक्षिण-पश्चिम कोने में एक महत्त्वपूर्ण नाली थी, जिससे जलाशय का पानी एक बड़े नाले में बह जाता था। इसके उत्तर में एक गली के दूसरी ओर एक अपेक्षाकृत छोटी संरचना थी जिसमें 8 स्नानघर बने थे। मैके के अनुसार 'यह स्थान पुरोहितों के स्नान करने के लिए था, जबकि मुख्य जलाशय सार्वजनिक प्रयोग के लिए था।' इस संरचना के अनोखेपन से प्रतीत होता है कि इसका प्रयोग किसी प्रकार के विशेष धार्मिक आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था। यहाँ विशिष्ट नागरिक विशेष अवसरों पर स्नान किया करते थे। **सिंधु घाटी सभ्यता के विशाल स्नानघर का उपयोग संभवत: धार्मिक प्रयोजन के लिए किया जाता था।**
- **सभागार:** स्नानागार के समीप स्तम्भ युक्त एक बड़े हॉल के प्रमाण भी मिले हैं। इसके पश्चिम की तरफ कमरों की एक कतार में एक पुरुष की प्रतिमा बैठी हुई मुद्रा में पाई गई है। धौलावीरा से उत्खनन के दौरान काले रंग के पॉलिशदार स्तम्भ प्राप्त हुए हैं जो किसी स्तम्भ युक्त बड़े भवन के अवशेष प्रतीत होते हैं। इसके बाद इस प्रकार के स्तम्भों का प्रयोग केवल मौर्यकाल में ही देखने को मिलता है।
- सिंधु सभ्यता के योजनाबद्ध निर्माण को देखते हुए अनुमान किया जाता है कि यहाँ नगरपालिका जैसी कोई संस्था अवश्य रही होगी।

सिंधु लिपि ('भाव-चित्रात्मक' (Pictographic) व गोमूत्राक्षर लिपि):

- यह भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञात लेखन की सबसे प्रारम्भिक शैली है।
- सिंधुवासियों को **लिपि का ज्ञान** था। इस लिपि की लिखावट अधिकांश बायीं से दायीं ओर है तथा कुछ लेखन दायीं से बायीं ओर भी हुआ है। बी.बी. लाल ने इसे '**बुस्ट्रोफेदम**' नाम दिया है। **यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं गई है।** इसमें चिड़िया, मछली तथा विभिन्न प्रकार की मानवाकृतियाँ भी बनी हुई हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता के अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त हैं। सबसे लंबे अभिलेख में लगभग 26 चिह्न हैं। यहाँ की लिपि निश्चित रूप से वर्णमालीय (जहाँ प्रत्येक चिह्न एक स्वर अथवा व्यंजन को दर्शाता है।) नहीं थी क्योंकि इसमें चिह्नों की संख्या कहीं अधिक है- लगभग 375 से 400 के बीच।

सामाजिक जीवन:

- बी.बी. लाल ने कालीबंगा में उत्खनन के बाद दर्शाया कि यहाँ पर तत्कालीन समाज तीन भागों में विभाजित था-
  (1) **पुजारी वर्ग**- यह उस काल का शासकीय वर्ग था, जो गढ़ी में निवास करता था। मोहनजोदड़ो में स्नानागार के आसपास कमरे बने हुए थे जहाँ स्नान के बाद पुजारी अपने वस्त्र बदलते थे। यहीं से मुख्य पुजारी के भवन के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
  (2) **किसान व व्यापारी वर्ग**- यह वर्ग निचले शहर में निवास करता था। मोहनजोदड़ो में यहीं पर दो-दो कमरों वाले गरीब वर्ग के आवासीय भवन भी मिले हैं। इस प्रकार दुर्ग के बाहर गरीब वर्ग निवास करता था। इन्हें कर के रूप में अन्न देना पड़ता था। धौलावीरा में अभिजात वर्ग गढ़ी में, व्यापारी और कृषक वर्ग मध्य शहर में और गरीब वर्ग निचले शहर में निवास करता था। हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की निचली बस्ती में **एक कक्षीय बैरकनुमा आवास** भी मिले हैं। इनमें संभवत: **मजदूर वर्ग** रहता था।
  (3) **कारीगर अथवा श्रमिक वर्ग**- यह वर्ग नगर की सुरक्षा प्राचीर से बाहर निवास करता था।
- हड़प्पा सभ्यता को लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर **शहरी सभ्यता** कहा जाता है।
- हड़प्पाकालीन विभिन्न स्थलों से अनेक नरकंकालों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनके अध्ययन से पता चलता है कि मुख्य रूप से यहाँ के निवासी चार प्रजातियों में विभक्त थे-
  (i) प्रोटो-ऑस्ट्रेलायड अथवा काकेशियन (ii) भूमध्यसागरीय
  (iii) मंगोलियन (iv) अल्पाइन
  इनके अलावा मोहनजोदड़ो में वर्तमान सिंधी जाति के लोग भी निवास करते थे।
- **नारी की स्थिति: सिंधु समाज मातृ सत्तात्मक था।** यहाँ स्त्री की मिट्टी की मूर्तियाँ बहुतायत में मिली हैं, जिन्हें पूजा के लिए निर्मित मातृदेवी की मूर्तियाँ माना गया है। इस स्थिति में स्त्रियों की समाज और परिवार में उच्च स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है।
- यहाँ के लोग विलासितापूर्ण जीवन जीते थे।
- सिन्धु सभ्यता में हड़प्पा की खुदाई में छोटे-बड़े सभी मकान साथ मिलते हैं जिससे ज्ञात होता है कि यहाँ सभी लोग परस्पर मेल-मिलाप से रहते थे।
- सिंधु नगरों में सामाजिक जीवन और जनस्वास्थ्य की आवश्यकताओं के प्रति गम्भीर जागरूकता परिलक्षित होती है।
- **वेशभूषा, आभूषण और प्रसाधन:** स्त्रियों की प्राप्त मृण्मूर्तियों से उनकी वेशभूषा की जानकारी मिलती है। इन मूर्तियों में उनके शरीर का ऊपरी भाग वस्त्रविहीन है और अधोभाग में उन्हें घुटनों तक घाघरा की तरह एक घेरदार वस्त्र पहने दिखाया गया है। प्राप्त पुरुष मूर्तियाँ भी अधिकांशत: नग्न हैं। कुछ पुरुष मूर्तियों (जैसे पुरोहित राजा की मूर्ति) के ऊपर शॉल जैसा वस्त्र ओढ़े हुए दिखाया गया है। पुरुष दाढ़ी-मूँछ रखते थे।

  स्त्रियों द्वारा बालों को सँवारने के लिए कंघियों का और मुख की छवि देखने के लिए काँसे के दर्पण का प्रयोग किया जाता था। हड़प्पा सभ्यता में महिलाएँ सौंदर्य और शृंगार पर काफी समय व धन खर्च करती थीं। स्त्रियाँ सुन्दर दिखने के लिए सिंदूर, काजल व लाली का प्रयोग करती थीं और चेहरे पर लेप लगाती थीं। केश-सज्जा की भिन्न-भिन्न शैलियाँ प्रचलित थीं। **चन्हूदड़ो से लिपस्टिक जैसी सामग्री के प्रमाण मिले हैं।**
- मनोरंजन के लिए सैंधव सभ्यता के लोग चौपड़, शतरंज और पासा खेलते थे। वे शिकार खेलना, नृत्य करना, वाद्य यंत्र बजाना तथा मुर्गों की लड़ाई आदि से भी मनोरंजन करते थे।
- **सिंधु सभ्यता के लोग तलवार से परिचित नहीं थे।**

Bookbaazi.in

- **अंतिम संस्कार:**

मोहनजोदड़ो में अंतिम संस्कार की तीन विधियाँ
(1) **पूर्ण दफन**- इसमें मृतक शरीर को पीठ के बल, सिर को साधारणत: उत्तर दिशा में व पैर दक्षिण दिशा में रखकर दफनाया जाता था।
(2) **आंशिक दफन**- शव को जंगली जानवरों तथा चिड़ियों के समक्ष कुछ दिन छोड़कर कुछ अस्थियों को पवित्र पात्र में रखकर भूमि में दफन।
(3) **दाह संस्कार के बाद दफन**- तृतीय विधि में शव जला दिया जाता था और कभी-कभी भस्म गाड़ दी जाती थी। लेकिन साधारणत: पूर्ण दफन का प्रयोग होता था।

  - हड़प्पा स्थलों से मिले शवाधानों में आमतौर पर मृतकों को गर्तों में दफनाया गया था।
  - कुछ कब्रों में मृद्भाण्ड व आभूषण मिले हैं। 1980 के दशक के मध्य में हड़प्पा के कब्रिस्तान में हुए उत्खननों में एक पुरुष की खोपड़ी के समीप शंख के तीन छल्ले, जैस्पर के मनके तथा सैकड़ों की संख्या में सूक्ष्म मनकों से बना एक आभूषण मिला था। कहीं-कहीं पर मृतक को ताँबे के दर्पणों के साथ दफनाया गया था। इससे प्रतीत होता है कि वे पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। **लेकिन सामान्यत: हड़प्पा सभ्यता के निवासियों का मृतकों के साथ बहुमूल्य वस्तुएँ दफनाने में विश्वास नहीं था।**
- **जादू टोना:** खुदाई में मिले अनेक तावीजों से यह भी विदित होता है कि सिंधु सभ्यता के लोगों का जादू-टोने व तंत्र-मंत्र में विश्वास था।

◈ **राज्य संरचना:**
- हड़प्पा सभ्यता में एक सुदृढ़ प्रशासन तंत्र का अस्तित्व था।
- यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था में धर्म की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। **मैके** के अनुसार मोहनजोदड़ो में एक प्रतिनिधि शासक शासन करता था।
- **हण्टर** के अनुसार सिंधु सभ्यता का प्रशासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था।
- अधिकांश विद्वानों के मतानुसार सिंधु सभ्यता का प्रशासन उत्तर में हड़प्पा और दक्षिण में मोहनजोदड़ो नामक नगरों की दो राजधानियों से होता था। दोनों नगरों में दुर्ग के अवशेष प्राप्त हुए हैं जहाँ पर उच्चाधिकारी निवास करते थे।
- पौशल महोदय के अनुसार इस सभ्यता का पाकिस्तान स्थित पंजाब के आसपास का उत्तरी क्षेत्र एक अलग राज्य था तथा हड़प्पा उसकी राजधानी थी। इसी तरह दक्षिण स्थित क्षेत्र सिंध की राजधानी मोहनजोदड़ो रही होगी। इसके अतिरिक्त लोथल, कालीबंगा व राखीगढ़ी भी प्रमुख नगर अथवा राजधानियाँ रही होंगी। अत: यह कहा जा सकता है **सिंधु सभ्यता के भी अलग-अलग राज्य तथा उनके प्रमुख शहर या राजधानियाँ थीं।**

◈ **कृषि:**
- सिंधु प्रदेश की भूमि आज की अपेक्षा पहले अधिक उपजाऊ थी। इस क्षेत्र की उर्वरता का विशेष कारण सिंधु नदी व उसमें आने वाली बाढ़ें थीं, जो इन मैदानों को उपजाऊ मिट्टी से भर देती थीं।
- हड़प्पा के लोग गेहूँ, जौ, दालें, सफेद चना, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे। गेहूँ व जौ मुख्य खाद्यान्न था। यहाँ दो किस्मों के गेहूँ (क्लब गाँठदार गेहूँ तथा लघु आकार का गेहूँ) की पैदावार की जाती थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से धान की खेती का कोई प्रमाण नहीं मिलता। **बाजरे के दाने** गुजरात के स्थलों से प्राप्त हुए थे। चावल की खेती के साक्ष्य केवल **लोथल व रंगपुर** (दोनों गुजरात) में मिले हैं। गुजरात से रागी की फसल और छोटी ज्वार की खेती के प्रमाण भी मिले हैं। बालाकोट से बाजरा और ज्वार की खेती के प्रमाण मिले हैं। यहाँ अनेक फल (खरबूजा, तरबूज आदि) भी उगाये जाते थे।
- मोहनजोदड़ो से कपड़े के टुकड़ों के अवशेष, चाँदी के एक फूलदान के ढक्कन तथा कुछ अन्य ताँबे की वस्तुओं से चिपके हुए मिले हैं।
- पकी मिट्टी तथा फ़ेयॉन्स से बनी तकलियाँ सूत कताई का संकेत देती हैं। फ़ेयॉन्स को कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता था। फ़ेयॉन्स से मनके, चूड़ियाँ, झुमके और छोटे बर्तन बनाए जाते थे। फ़ेयॉन्स से बने लघुपात्र अधिकांशत: मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से मिले हैं। कालीबंगा जैसी छोटी बस्तियों से बिल्कुल नहीं।
- कृषि में प्रयुक्त होने वाले उपकरण कम संख्या में प्राप्त हुए हैं। कृषि में लकड़ी के हल का प्रयोग किया जाता था। खेत जोतने के लिए बैलों का प्रयोग होता था। चोलिस्तान के कई स्थलों और बनावली (हरियाणा) से **मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप** मिले हैं। चोलिस्तान थार रेगिस्तान से लगा हुआ पाकिस्तान का रेगिस्तानी क्षेत्र है।
- हड़प्पाकालीन मोहरों पर अंकित बैलों से विदित होता है कि वहाँ दो कोटि के बैल थे-
  (1) **प्रथम**- कूबड़ वाले और बड़े सींग वाले बैल।
  (2) **द्वितीय**- कूबड़ रहित और छोटे सींग वाले बैल।
- हड़प्पा स्थल अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में स्थित है। अत: इस क्षेत्र में बारिश कम होने के कारण सिंचाई के तरीके भी यहाँ अपनाए गए। अफगानिस्तान में शोर्तुगोई नामक हड़प्पा स्थल से नहरों के कुछ अवशेष मिले हैं परन्तु पंजाब व सिंध में नहीं। बलूचिस्तान व धौलावीरा में मिले बड़े-बड़े जलाशयों का प्रयोग संभवत: कृषि के लिए जल संचयन हेतु किया जाता था।
- वस्त्र के लिए सिन्धु नागरिक कपास और ऊन का प्रयोग करते थे। सिंधु घाटी के घरों में बड़ी संख्या में **तकुए** और **तकुआ** चक्रियाँ भी मिली हैं, जिससे पता चलता है कि उन दिनों कपास और ऊन की कताई बहुत प्रचलित थी। तकुए की चक्रियाँ मिट्टी तथा सीपियों की बनी हुई पाई गई हैं।
- अनाज पीसने के लिए चक्कियों और कूटने के लिए ओखलियों का प्रयोग होता था। लोथल से चक्की के दोनों पाट मिले हैं।
- हिन्दी ग्रंथ अकादमी की हुकुमचंद जैन की पुस्तक के अनुसार विश्व के इतिहास में सबसे पहले कपास की खेती सिंधु सभ्यता के निवासियों ने प्रारम्भ की थी। लेकिन NCERT की पुस्तक के अनुसार लगभग 7000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती के प्रमाण मिले हैं।

◈ **पशुपालन:**
- हड़प्पा में पशुपालन भी एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था। हड़प्पा के लोग गाय, भैंस, बैल, भेड़, बकरियाँ, सूअर, खरगोश, बंदर, मुर्गा, कुत्ता और बिल्ली पालते थे। बस्तियों के आसपास तालाब और चरागाह होते थे। सूखे महीनों में मवेशियों के झुंडों को चारा-पानी की तलाश में दूर-दूर ले जाया जाता था। वे बेर जैसे फलों को इकट्ठा करते थे। **सिन्धु नागरिक सामिष और निरामिष दोनों प्रकार का भोजन करते थे।** भोजन के लिए जंगली जानवरों का शिकार भी किया जाता था। यहाँ वराह (सूअर), हिरण, कछुआ और घड़ियाल की हड्डियाँ भी मिली हैं। यहाँ मछली तथा पक्षियों की हड्डियाँ भी मिली हैं।
- सिंधुवासी हाथी, गधे, सूअर, गैंडे से भी परिचित थे।
- ऊँट की हड्डियाँ कालीबंगा से प्राप्त हुई हैं।
- सिन्धु स्थलों से घोड़े के साक्ष्य नहीं मिले हैं। लेकिन **लोथल से घोड़े की मृण्मूर्ति एवं सुरकोटड़ा व धौलावीरा से घोड़े की हड्डियों के अवशेष मिले हैं।** लेकिन घोड़े की सम्पूर्ण अस्थियाँ अभी किसी भी स्थल से प्राप्त नहीं हुई हैं।
- बर्तनों पर चिड़िया, मछली, पशु, पेड़ तथा पीपल की आकृतियों का अंकन मिलता है।
- अनेक पशु-पक्षियों की मृण्मूर्तियाँ व खिलौने भी मिले हैं।

Bookbaazi.in

◈ **कला:**

- **मृद्भाण्ड:** सिंधुवासी मृद्भाण्ड कला से भलीभाँति परिचित थे। सिंधु सभ्यता के स्थलों से दो प्रकार के मृद्भाण्ड- एक बिना डिजायन वाले तथा दूसरे चित्रित मृद्भाण्ड पर्याप्त मात्रा में मिले हैं। यहाँ बहुसंख्यक **गुलाबी रंग या लाल रंग के चमकीले मृद्भाण्ड** प्राप्त हुए हैं, जिन पर **गहरे लाल व काले रंग से चित्र** बने हुए हैं।
- विभिन्न पशु आकृतियों के **मिट्टी के खिलौने** प्राप्त।
- **सील**- मुहरें (सीलें) अधिकांशत: **सेलखड़ी** (स्टेटाइट-मुलायम पत्थर) की बनी हुई हैं। **अधिकांशत: वर्गाकार** व कुछ आयताकार सीलें या मोहरें प्राप्त हुई हैं। कुछ सीलें हाथीदाँत की भी हैं। सबसे प्रसिद्ध सील **पशुपति (योगी)** की सील है, जिसके सिर पर सींग अथवा सींगयुक्त मुकुट है तथा वह पद्मासन लगाए चौकी पर विराजमान है। इसके दाहिनी ओर **एक हाथी** और **एक बाघ** तथा बाईं ओर **एक गैंडा** व **एक भैंसा** दर्शाया गया है। यहाँ वृषभ मोहरें भी प्राप्त हुई हैं। **मुख्यत: यहाँ एक सींग वाले बिना कूबड़ वाले साँड की मुहरें मिली हैं साथ ही कुछ कूबड़ वाले बैल व गैंडा की सीलें भी प्राप्त हुई हैं।** सीलों का आकार आधा इंच से ढाई इंच तक है। वर्गाकार मुहरों पर जानवरों की आकृति एवं अभिलेख खुदे हैं तथा आयताकार मुहरों पर केवल संक्षिप्त अभिलेख हैं।
- इन मुहरों पर लिखने का कार्य **'लिपिक'** करते थे।
- **हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त कई मुहरों पर जहाजों की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।** लोथल से पक्की मिट्टी से बना जहाज का नमूना मिला है जिसमें मस्तूल के लिए लकड़ी और उसे लगाने के लिए एक छेद बना है।
- हड़प्पा से लाल पत्थर की बनी **खड़े नग्न पुरुष की मूर्ति** प्राप्त हुई है।
- पत्थर की मूर्तियों में सर्वोत्तम उदाहरण मोहनजोदड़ो से प्राप्त सेलखड़ी निर्मित **दाढ़ी वाले व्यक्ति** का है, जिसके वस्त्र-आभूषण सज्जित हैं। इसे **'पुरोहित-राजा'** नाम दिया गया है। इसके बालों में बीच की माँग है। इसके कान सीप जैसे दिखाई देते हैं और उनके बीच में छेद हैं। सिर के चारों ओर एक सादा बना हुआ फीता बँधा हुआ दिखाया गया है। दाहिनी भुजा पर एक बाजूबंद है और गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे छेद बने हैं जिससे लगता है कि वह हार पहने हुए है। इस मूर्ति को शॉल ओढ़े हुए दिखाया गया है। शॉल कंधे के ऊपर से और दाहिनी भुजा के नीचे से डाली गई है। यह शॉल त्रिफुलिया नमूनों से सजी हुई है।
- प्रारंभिक हड़प्पावासी मिट्टी के बर्तनों के निर्माण हेतु पैर से चलाये जाने वाले चाक प्रयोग में लेते थे। परिपक्व हड़प्पा सभ्यता के काल में हाथ से चलाये जाने वाले **चाक (कुम्हार का चाक)** का प्रयोग किया जाने लगा था। बर्तनों पर सजावट कर अलंकृत भी किया जाता था।
- यहाँ के निवासियों को विभिन्न धातुओं की जानकारी थी। यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी। यहाँ ताँबे का प्रयोग भी बहुतायत से किया जाता था। ताँबे से विस्तृत पैमाने पर कई उपकरण- कुल्हाड़ी, छेनियाँ, छुरियाँ, छोटी आरियाँ, तीर व भाले का अग्रभाग, मछली पकड़ने का काँटा और चाकू आदि बनाए जाते थे। ताँबा और टीन को मिलाकर काँसा तैयार किया जाता था।

नर्तकी (Dancing Girl) ★★★REET Mains 3rd ग्रेड, L-II 2022-23

- मोहनजोदड़ो से **लगभग 4 इंच लम्बी एक नर्तकी की कांस्य मूर्ति प्राप्त हुई है**, जिसमें जूड़ा बाँधे एक युवती नृत्य मुद्रा में दिखाई गई है। इसमें नर्तकी को कमर पर हाथ रखे त्रिभंगी मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। नर्तकी की त्वचा का रंग साँवला दिखाया गया है। यह लगभग निर्वस्त्र है। इसकी बायीं भुजा चूड़ियों से ढकी हुई है।

- यहाँ काँसे की बनी हुई जानवरों की मूर्तियों में भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। लोथल में काँसे से बना कुत्ता तथा पक्षी और कालीबंगा में साँड की कांस्य मूर्ति मिली है।
- **वृषभ प्रतिमा:** मोहनजोदड़ो में पाई गई यह कांस्य प्रतिमा विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि इसमें एक भारी-भरकम वृषभ को आक्रामक मुद्रा में बखूबी प्रस्तुत किया गया है। वृषभ गुस्से में अपना सिर दाईं ओर घुमाए हुए है और उसके गले में एक रस्सा बँधा हुआ है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'दाढ़ी वाला आदमी' (पुरोहित-राजा) व 'काँसे की नर्तकी' राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में संगृहीत है।
- हड़प्पा सभ्यता के दौरान कांस्य की मूर्तियाँ बनाने के लिए **'लॉस्ट वैक्स कास्टिंग'** तकनीक का उपयोग किया गया था।
- लोथल व देसलपुर से ताँबे की मुहरें भी मिली हैं।
- हड़प्पा तथा चन्हूदड़ो से **ताँबे अथवा काँसे की बैलगाड़ी** की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं जिन पर उनका चालक भी बैठा हुआ है, इसके साथ ही पंजाब में अब भी प्रचलित इक्कों की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।
- सिंधुवासी चाँदी, स्वर्ण, सीसा, ताँबा, काँसा आदि प्रमुख धातुओं का प्रयोग करते थे। **ताँबे और काँसे से औजार**, हथियार, गहने तथा बर्तन बनाए जाते थे। सोने और चाँदी से गहने और बर्तन बनाए जाते थे।
- भारत में चाँदी सर्वप्रथम सिंधु सभ्यता में पाई गई है।
- मोहनजोदड़ो व हड़प्पा से विस्तृत पैमाने पर सोने के आभूषण प्राप्त हुए हैं। चाँदी का प्रचलन सोने की अपेक्षा अधिक था। चाँदी के आभूषण और बर्तन बनाए जाते थे।
- सिंधु लोगों के **चमकीले बर्तन प्राचीन विश्व में अपनी तरह के प्रथम उदाहरण हैं।**
- सिंधु सभ्यता के लोग धातु गलाने की विधि से भी परिचित थे। **मोहनजोदड़ो से ताँबे का गला हुआ एक ढेर भी प्राप्त हुआ है।** धातुओं के गले हुए द्रव को साँचों में भरकर विभिन्न आकार दिए जाते थे।
- हड़प्पा में निचली **बस्ती में 16 भट्टियाँ मिली हैं** तथा एक मिट्टी का मूषा मिला है। संभवत: यहाँ ताँबा गलाने का काम होता था।
- **मनकों का निर्माण:** यहाँ के लोग कीमती पत्थरों के मनके और आभूषण बनाने की कला से परिचित थे। कार्नेलियन (सुंदर लाल रंग का), जमुनिया, सूर्यकांत, कांचमणि, फिरोजा, लाजवर्द मणि, जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर, ताँबा, काँसा, सोना तथा शंख, फ़याँन्स और पकी मिट्टी, सभी का प्रयोग मनके बनाने में होता था। लोथल एवं चन्हूदड़ो में **कार्नेलियन के सुराखदार मनकों** का निर्माण होता था। **हड़प्पा, लोथल और चन्हूदड़ो से मनके बनाने के कारखाने** मिले हैं। मनकों का व्यापार मेसोपोटामिया के साथ विस्तृत पैमाने पर होता था।
- सिंधु संस्कृति में **'सीपी निर्माण'** कार्य एक विकसित शिल्प था। नागेश्वर, बालाकोट, लोथल, चन्हूदड़ो व कुंतासी, जो समुद्र तट के समीप स्थित बस्तियाँ थीं, में शंख या सीपी आसानी से उपलब्ध थे। अत: ये शंख से बनी वस्तुओं- मनके, चूड़ियाँ, करछियाँ आदि के निर्माण के विशिष्ट केन्द्र थे।
- इस काल में धातु के अतिरिक्त पत्थर के भी उपकरण बनाए जाते थे जिनमें दराँती, खुरचनियाँ, बरमे तथा फलक आदि मुख्य थे। इन उपकरणों का उपयोग मणिकारी, दस्तकारी और नक्काशी आदि में किया जाता था। पत्थर की अनेक मूर्तियाँ भी विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुई हैं। यहाँ मातृका की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं।
- **पुरुष धड़:** पुरुष धड़ की यह मूर्ति लाल पत्थर की बनी हुई है। इसमें सिर और भुजाएँ जोड़ने के लिए गर्दन और कंधों में गड्ढे बने हुए हैं।

Bookbaazi.in